ck) dkyhu f'k{kk ,oa 'kkfr f'k{kk dk vË;;u

अक्षय चौधरी
रिसर्च स्कॉलर (पीएच.डी.)
चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय
मेरठ (यू.पी.) भारत

lkjk'k

वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में बौद्धकालीन शिक्षा के बहुत से उद्देश्यों को समाहित करके ही, शिक्षा प्रणाली को परिपूर्ण बनाया जा सकता है। बौद्ध धर्म व गौतम बुद्ध के उपदेश बौद्ध शिक्षा प्रणाली के केन्द्र बिन्दु थे। परन्तु बौद्ध शिक्षा में निहित अहिंसा, मानववाद, विश्व बन्धुत्व विश्वशांति बसुधैव कुटुम्बकम, प्रजातांत्रिक संगठन की झलक ही इसे अन्य शिक्षा व्यवस्था से अलग बनाती है। छात्र व अध्यापकों का त्यागपूर्ण जीवन ऐसे तत्व है जो आज कहीं न कहीं हमारी वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में कम ही परिलक्षित होते हैं। आज छात्रों में धन की लोलुपता वैभवपूर्ण जीवन जीने की इच्छा, हिंसा युक्त परिवेश में रहने की आदत, अनुशासन की अदृश्यता जैसे विकास उत्पन्न हुये हैं अतः यह नितान्त आवश्यक है कि छात्रों में इन समस्याओं को दूर करने के लिये, नैतिक विकास, व्यक्तित्व विकास, जीविका की तैयारी जैसे प्रासंगिक उद्देश्यों को लेकर शिक्षा दी जाये, जिससे आधुनिक समाज में भी वह पुरातन मूल्यों से विमुख न हो और सभ्य समाज का निर्माण करें तथा भविष्य में भारत के कर्णधार बन सकें। आज के परिद ृश्य में सम्पूर्ण विश्व नवीन चुनौतियों से घिरा हुआ है, जिसमें परमाणु युद्ध से लेकर, सांस्कृतिक विलोपन तक का खतरा है।

iLrkouk

यह एक सर्वविदित सत्य है कि शिक्षा किसी भी व्यक्ति राष्ट्र समाज के विकास की संजीवनी है शिक्षा का सम्बन्ध केवल साक्षरता से ही नहीं बल्कि शिक्षा व्यक्ति में चेतना आत्मनिर्भरता और उत्तरदायित्व की भावना का विकास करती है। 2500 वर्ष पूर्व गौतम बुद्ध ने बौद्ध धर्म को प्रवर्तित किया। बौद्ध धर्म भारतीय जीवन के आंगिक विकास का परिणाम था न कि किसी बाह्य वृत्ति का परिणाम। अतः बौद्धकालीन शिक्षा काफी हद तक वैदिक शिक्षा क` समान ही थी, जिस प्रकार से यज्ञ वैदिक काल में ज्ञान तथा शिक्षा के केन्द्र में थी ठीक उसी तरह बौद्ध कालीन शिक्षा व्यवस्था में बिहार एवं मठों में प्रचलित शिक्षा केन्द्र में थी। बौद्ध धर्ममें निर्वाण पर अधिक जोर दिया गया। निर्वाण से अभिप्राय उस स्थिति से था, जिसमें सभी लालसाएं समाप्त हो जाती है। निर्वाण की प्राप्ति वर्तमान जीवन में भी सम्भव हो सकती है। अतः बुद्धकाल की शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य जीवन में निर्वाण प्राप्त करने का उपाय जानना था। दूसरे शब्दों में बौद्ध शिक्षा का उद्देश्य छात्रों को ऐसा आचरण सिखाना था जिससे मस्तिष्क की स्थिरता व शांति प्राप्त हो सके। इसने व्यापक पाठ्यक्रम को स्वयं म ं समायोजित किया तथा समाज क` एक विशेष वर्ग का शिक्षण व ज्ञान प्राप्ति का रास्ता खोला और वैदिक कालीन आनुवंशिकी एकाधिकार को समाप्त कर दिया, तथा जनमानस की शिक्षा का महत्व समझाया और धीरे–धीरे शिक्षा को सर्वसुलभ बनाने का प्रयास किया। जो कि आज के वर्तमान युग में पूर्णतः प्रासंगिक है। बौद्ध कालीन शिक्षा ने शांति शिक्षा के लिए व्यापक स्तर पर पाठ्यक्रम तैयार कर दिया। यदि बौद्धदर्शन को ध्यान से देखें तो हम पाते है कि उन्होंने

अतिशयवादिता को त्यागकर मध्यम मार्ग पर चलने का विचार दिया जिसमें जनमानस और लोककल्याणकारी तत्वों का समावेश हो, बुद्ध के अनुसार जन्म मृत्यु संयोग–वियोग आदि सभी दुखमय है। तृष्णा या लालसा सम्पूर्ण दुखों का कारण है। तृष्णा के विरोध से दुख की निवृत्ति हो सकती है।

v/;;u dh vko';drk ,o egRo&

आधुनिक समय में विश्व कई ऐसी समस्याओं से जूझ रहा है जो मानवता एवं संस्कृति के लिये काफी हानिकारक है। जिसमें आतंकवाद, परमाणु युद्ध, क्षेत्रीय असन्तुलन, बेरोजगारी, मानवाधिकार अतिक्रमण, लिंगभेद जैसे प्रमुख मुद्दे शामिल है। इन्हीं समस्याओं को खत्म करने में शा ंति शिक्षा की आवश्यकता महसूस की जा रही है। और इसको किन–किन माध्यमों एवं आधारों से जोड़ कर दिया जाये वर्तमान में इसकी आवश्यकता महसूस की जा रही है। शांति शिक्षा का महत्व तब और भी बढ़ जाता है। जब हम विश्व शांति एवं सद्भाव के विकास की बात करते हैं और छात्रों को विश्व नागरिकता के लिये तैयार करते है। तथा छात्रों को उन सभी आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक तथा सांस्कृतिक तत्वों की जानकारी प्रदान करते हैं। अतः विश्व शांति एवं सद ्भाव में शान्ति शिक्षा के शैक्षणिक कार्यक्रमों एवं उपयुक्त उद्देश्यों के माध्यम से ही पारम्परिक शिक्षा के कार्यक्रमों में परिवर्तन लाने की आवश्यकता है। जिसमें ''आत्मवत् सर्वभूतेषुवसुधैव कुटुम्बकम'' एवं गांधी जी द्वारा सत्य अहिंसा तथा महात्मा बुद्ध द्वारा स्थापित शांति सद्भावना, मानवाद जैसे मूल्यो का समावेशन हो।

ck) dkyhu f'k{kk e 'kkfr f'k{kk d vo;o

बुद्ध ने आत्मिक क्लेश और अशान्ति के दमन के लिये मज्झिमाप्रतिपदा का मार्ग बताया और यह उपदेश दिया कि यह सांसारिक कार्य–कारणों में ही दुख है और इनका निराकरण भी सम्भव है इसलिए उन्हो ंने चार आर्य सत्यों (चत्वारि आर्य सत्यानि) का निरूपण किया जिसमें कहा कि यदि दुःख है। दुःख का कारण है, दुख का उपचार है, दुख से मुक्ति है। इन्हीं द ुखों का निरोध करने के लिए उन्होंने आठ आर्य सत्य/या आष्टांगिक मार्ग बताए है। जो आज अक्षरशः विश्व मानस पर सार्थक सिद्ध हो रहे है। हम इन्हीं मूल्यों को अपने पाठ्यक्रमों में अपना रहे है ं और आज भी यदि इन मूल्यों को जीवन में समाहित कर लें तो सम्भवतः दुःखों का निवारण हो सकता है। बुद्ध ने दुःख निवारण मार्ग में शील, समाधि और प्रज्ञा को निवारण का मार्ग बताया है। 1. सम्यक दृष्टि– अपने दृष्टिकोण को ठीक रखना चाहिये क्योंकि हमारा दृष्टिकोण जैसा होगा वैसा ही हमारा काम होगा तद ्न ुरूप उसका परिणाम भी वैसा ही निकलता है।

सम्यक संकल्प– हमारे संकल्प, विचार आसक्ति, द्वेष, तथा अहिंसा से मुक्त हो। गलत विचार एवं धारणाएं हमारे अन्दर न पनपने पाये। हमारे विचार पवित्र और शुद्ध हों। 3. सम्यक वाक्– हमें अप्रिय वचनों को बोलन े से बचना चाहिये, बोलचाल ठीक नहीं रहने पर मनुष्य स्वयं तो द ुःख पाता है और द ूसरों को भी द ुख देता है। अप्रिय वचनों का सर्वथा परित्याग ही सम्यक् वाक ् है। 4. सम्यक कर्मान्त– हमारे कार्य सम्यक हो। दान, दया, सत्य अहिंसा आदि सत्कर्मा ें का अन ुसरण ही सम्यक् कर्मान्त है। 5. सम्यक ् आजीविका– हमारी आजीविका क े साधन ठीक होने चाहिये। सदाचार क े नियमों के अन ुकूल आजीविका के अन ुसरण करन े को सम्यक् आजीव कहा जाता है। 6. सम्यक व्यायाम (भाव)– किसी काम को करन े क े लिए हमारे प्रयत्न सही दिशा म ें होने चाहिये। न ैतिक मानसिक एवं अध्यात्मिक उन्नति के लिए सतत ् प्रयत्न करना ही सम्यक् व्यायाम है। 7. सम्यक स्मृति– मिथ्या भाव को त्याग कर मन, वचन तथा कर्मों को याद रखना और सच्ची धारणा रखना ही सम्यक् स्मृति है। 8. सम्यक समाधि– मन अथवा चित्त की एकाग्रता को सम्यक समाधि कहते हैं। इन्हें ही आष्टांगिक मार्ग कहा जाता है। इस आष्टांगिक मार्ग से ही मोक्ष (निर्वाण) के सम्बन्ध में शिक्षा देने हेतु संघ बनाये गये बौद्धकालीन शिक्षा इन्हीं संघों तक सीमित थी तथा पूरी तरह प्रवृत्यात्मक थी।

'kks/k v/;;u d mnn';

1. प्रस्तुत शोध अध्ययन में बौद्ध कालीन शिक्षा व्यवस्था का अध्ययन करते हुये, उसे मानवीय एवं शांति शिक्षा के व्यापक आधारों का अध्ययन करना।
2. प्रस्तुत शोध अध्ययन में विश्वशान्ति एवं सद्भाव के सम्बन्ध में सामाजिक कुशलताओं का अध्ययन करना।
3. शांति शिक्षा के पाठ्यक्रमों का व्यापक एवं विस्तारपूर्वक अध्ययन करना।
4. विश्वशांति सद भाव एवं अन्तर्राष्ट्रीय भावना के विकास में बौद्धकालीन शिक्षा व्यवस्था एवं वर्तमान शांति शिक्षा कार्यक्रमों का अध्ययन। 5. शांति शिक्षा के मार्ग में आने वाली बाधाओ का अध्ययन करना।

बौद्ध शिक्षा की वर्तमान में प्रासंगिकता– जिस प्रकार वैदिक युगीन शिक्षा की बहुत सी विशेषतायें आज भी प्रासंगिक है। ठीक उसी तरह बौद्ध कालीन शिक्षा के भी कुछ प्रमुख लक्षण आधुनिक समय में उपादेय सिद्ध हुये है। वर्तमान शिक्षा में यदि नैतिक चरित्र (पंचशील व्रत, अष्ठशील मार्ग) का विकास व्यकितत्व का विकास तथा जीविका की तैयारी आज भी पूर्णतया प्रासंगिक है। वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में इसे समाहित करके ही शिक्षा प्रणाली को पूर्ण बनाया जा सकता है। बौद्ध शिक्षा प्रणाली के इस सिक्खा पदानि अर्थात् दस शिक्षा पद आज भी पूर्णतया उपयोगी तथा सम्यक है। इस दस आदेशों का छात्रों के द्वारा यदि पालन किया जाये तो वर्तमान समय के साम्प्रदायिक वातावरण, भ्रष्टाचार मादक पदार्थों के सेवन, झूठ बोलना, पर निन्दा आदि व्यक्तिगत विकारों से बचा जा सकता है। बौद्धकाल में छात्र एवं अध्यापक सम्बन्ध भी अपने आप में एक उदाहरण है। जिसको आज हमें पुनर्जीवित करना होगा।

शिक्षा संस्थाओं में आये दिन उपद्रव, हड़ताल, अनुशासनहीनता तथा अध्यापकों के साथ होने वाली अभद्रता को बौद्ध शिक्षा के मूल्यों से कम किया जा सकता है। वैभव व चमक–दमक, हिंसा से युक्त परिवेश धन व अधिकार की लालसा तथा घृणा व द्वेष से परिपूर्ण वर्तमान जीवन में बौद्ध शिक्षा के ये तत्व सम्यक योगदान कर सकते हैं और भारतीय आधुनिक शिक्षा प्रणाली में समेकित किये जा सकते है।

- शिक्षा संस्थाओं का प्रजातांत्रिक संगठन
- छात्रों तथा अध्यापकों का सरल जीवन
- शांति व अहिंसा का अनुसरण
- जनसामान्य शिक्षा
- मानववाद, विश्वबन्धुत्व एवं विश्वशांति की शिक्षा
- व्यवसायिक कुशलता का विकास

'kkfr f'k{kk dh oreku e vko';drk&

शांति शिक्षा के सनदर्भ में हमारे समक्ष तीन प्रश्न उठ खड़े होते हैं यथा–
1ण शान्ति शिक्षा क्या है।
2ण शान्ति शिक्षा कैसे दी जाये?
3ण शान्ति शिक्षा किस लिये दी जाये?
शांति का शाब्दिक अर्थ है सुखकारी या कल्याणकारी अर्थात् ऐसी शिक्षा जो स्वयं तथा जगत दोनों के लिए कल्याणकारी हो। ऐसे स्वतंत्र व्यवस्था स्थापित करती हो जिसमें वयैक्तिक स्वतंत्रता एवं

सामाजिक न्याय की परिकल्पना परिपूर्ण हो अतः हम यह कह सकते हैं कि शांति शिक्षा शारीरिक, बौद्धिक पक्ष से परे जाकर आन्तरिक क्षेत्र में आन्तरिक चेतना को जागृत करना है। आन्तरिक चेतना को प्रकाशित करने के लिए अहिंसा, सत्य, अस्तेय, अपरिग्रह आत्म संयम सन्तोष तप तथा स्वध्याय जैसे नियमों का पालन करना होगा। शान्ति की शिक्षा धार्मिक सहिष्णुता, विश्व बन्धुत्व की भावना, नैतिक मूल्यों के निर्माण सम्मानजनक जीवन यापन, भय से मुक्ति, मानवाद आदि के लिये आवश्यक दिखाई पड़ती है। शांति शिक्षा विश्व निर्माण एवं विश्वशांति में महत्वपूर्ण भूमिका को निभा सकती है। अतः यह प्रश्न की शांति शिक्षा किस लिये दी जाये तो इसका उत्तर स्वतः मिल जाता है। जिसमें हम पाते हैं कि सम्पूर्ण विश्व में चारों तरफ अशांत वातावरण छाया हुआ है। चाहे वह विद्यालय हो घर हो, धार्मिक संस्थायें हो, प्रान्त या राष्ट्र हो, चारों तरफ एक भय अनुशासनहीनता, हिंसा, उग्रता की स्थिति दिखाई देती है जो कहीं न कहीं सहअस्तित्व पूर्ण शांति शिक्षा के माध्यम से कम किया जा सकता है। जिसे अल्वर्ट आइन्स्टीन ने भी कहा है कि 'शांति को बलपूर्वक नहीं रखा जा सकता.. यदि बच्चों को युद्ध के लिये शिक्षित किया जा सकता है तो उन्हें शांन्ति के लिए क्यों नहीं शिक्षित किया जा सकता। यदि शैक्षणिक संस्थायें युद्ध की योजनाओं में रूचि ले सकती है। तो वे शान्ति की योजनाओं में रूचि क्यों नहीं ले सकती।''

शान्ति शिक्षा के सैद्धान्तिक स्वरूपों में पाठ्यक्रम को नैतिक शिक्षा, पर्यावरण शिक्षा, मूल्यों की शिक्षा पर विशेष बल देना होगा। व्यवहारिक कार्यक्रमों में हमें कुछ महत्वपूर्ण पहलुओं को पाठ्यक्रम में समावेशित करना होगा।

- साहित्यिक कार्यक्रम– भाषण, वाद, विवाद, निबंध लेखन, स्लोगन लेखन।
- सांस्कृतिक कार्यक्रम– कहानी, कथा, नाटक मंचन, कविता पाठ।
- वैश्विक शांति मूल्यों का कक्षाओं में प्रदर्शन तथा, शांति दिवस का आयोजन।
- शांति विषयक वार्ता, सेमिनार, व कार्यशालाओं का आयोजन
- खेल–कूद प्रतियोगिता
- राष्ट्रीय स्तर पर शांति शिविरों का आयोजन एवं राष्ट्रीय रैली का आयोजन
- पत्र, पत्रिकाओं और पुस्तकालयों में शांति शिक्षा से संबंधित साहित्यों का अधिकाधिक समावेशन।

'kkfr f'k{kk dk {k=

शांति शिक्षा को विभिन्न स्तरों पर लागू किया जा सकता है।

1. स्वयं सक्रिय स्तर
2. विद्यालयी स्तर
3. राष्ट्रीय स्तर
4. वैश्विक स्तर

1. स्वयं सक्रिय स्तर पर

समाज में परिवार प्राथमिक पाठशाला होती है और परिवार के सदस्य के रूप में सबसे पहली शिक्षा यहीं से प्रारम्भ होती है। ऐसे में परिवार द्वारा अपनाये गये उच्च आदर्श, व्यवहार एवं पारिवारिक वातावरण भी बालकों के व्यवहार को निर्धारित करता है। परिवार में होने वाले सामाजिक कार्यक्रमों रीति रिवाजों से बालक कई प्रकार की प्रक्रियाओं और मूल्यों को ग्रहण करता है। जिससे कई प्रकार क गुण, कौशलों का विकास अपने आप होते है। जिससे वह स्वयं सक्रिय रहते है। इसलिए व्यक्तिगत अर्थात स्वयं के सर्वांगीण विकास हेतु परिवार का कर्तव्य है कि बच्चों के समक्ष आदर्श व्यवहार एवं वातावरण का निर्माण करें जिससे सकारात्मक विचार, निर्णय क्षमता, दृढ़निश्चय, सहानुभूति पूर्वक रहना जैसे विचार पल्लवित एवं पुलकित होंगे।

2- fo|ky;h Lrj

शांति को बढ़ावा देने में विद्यालयी स्तर सर्वाधिक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। चूंकि बालक विद्यालय पूर्व ही बहुत से मूल्यों एवं कौशलों को अर्जित करता है। और विद्यालयी वातावरण में उसे परिलक्षित करता है। ऐसे में विद्यालय के शांतमय वातावरण सहयोगी एवं सहचर्य पूर्ण वातावरण विद्यार्थी के गुणों में उत्तरोत्तर वृद्धि करता है। अतः शिक्षकों को पढ़ाते समय प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष तौर से शांति के विषय में छात्रों के मध्य चर्चा करते रहनी चाहिये और उसके बारे में अवगत करायेंगे तो आसानी से शांति को विद्यालयों एवं विद्यार्थियों में स्थापित किया जा सकता है। शांति को बढ़ाने में अध्यापक सशक्त अभिकर्ता के रूप में कार्य करता है। जिसमें वह अध्ययन, अध्यापन, एवं प्रत्यक्ष कार्यों में कुशल पद्धति अपनाकर विद्यालय में सामंजस्ययुक्त एवं शांतिपूर्ण माहौल बना सकता है। जिससे विद्यार्थियों में उचित मूल्यों, सामाजिक सामंजस्य, न्यायशीलता का विकास होगा और वह समाज में शांति दूत बनकर उभरेंगे।

jk"Vªh; Lrj

वर्तमान समय में शिक्षा राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। किसी भी देश का भविष्य वहां के नागरिक संसाधन निर्धारित करते है। ऐसी स्थिति में शांति शिक्षा और भी महतवपूर्ण हो जाती है। जिससे विद्यार्थियों में सामाजिक, सांस्कृतिक एवं राष्ट्रीय चेतना का विकास किया जा सके और सामाजिक सामंजस्य को बढ़ावा मिल सके। राष्ट्रीय स्तर पर शांति शिक्षा द्वारा कुछ प्रमुख बातों को निस्तारित किया जा सकता है।

1. सभी धर्मों का सम्मान एवं इसमें किसी भी प्रकार का भेदभाव नहीं करेगा।
2. अहिंसा के सर्वांग मूल्यों को अपनाना।
3. पर्यावरण एवं प्रकृति की रक्षा करना।
4. अपनी संस्कृति में मूल्यपरक बिन्दुओं को महत्व देना।

oSf'od Lrj

इस भूमण्डलीकरण के दौर में संचार प्रौद्योगिकी ने विचारों, सूचनाओं एवं ज्ञान को किसी एक देश तक सीमित न रखते हुये इसे विश्वव्यापी बना दिया है। और यह सब शिक्षा के माध्यम से हुआ है। आज विश्व में हर देश की यही संकल्पना है कि वे अपने युवाओं को विश्व मानव एवं उच्च संसाधन में बदल सकें ताकि वह स्वयं एवं राष्ट्र का सकल विकास कर सकें जिसके लिये यह आवश्यक है कि उन्हें शांति शिक्षा के माध्यम से वैविश्क मुद्दों का समझाया जाये और उसके प्रति जागरूकता पैदा की जाये। जिनमें कुछ प्रमुख निम्नवत है–

1ण वैश्विक संस्कृति का ज्ञान प्रदान करना।
2ण सामुदायिकता एवं सहअस्तित्व के भाव को निहित करना।
3ण मानव अधिकारों की समझ विकसित करना।
4ण मानवीय मूल्यों एवं संस्कारों को समझाना।
5ण असमानता को दूर करने के लिए तत्पर करना।
6ण भ्रष्टाचार एवं आतंकवाद जैसे ज्वलंत मुद्दों को समझाना।
7ण लिंग असमानता एवं नस्लवाद को रोकने के लिये जागरूक करना।
8ण आधुनिक युग में युद्ध के बढ़ते खतरे को रोकने के लिये वैश्विक समझ विकसित करना।

fu"d"kZ

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि आज विश्व में जहां भी युद्ध हुए हैं, युद्ध चल रहे हैं, अशान्ति का वातावरण है या असुरक्षा की भावना है। वहीं पर शांति शिक्षा की आवश्यकता है। और शांति शिक्षा के व्यापक स्वरूप की हमें अपने शैक्षिक पाठ्यक्रमों में समावेशित करने की आवश्यकता है। जिसका अथाह आधार हमारे आंगन में ही पले बढ़े हुये बौद्ध धर्म की शिक्षाओं में मिलता है जिसमें यह स्पष्ट रूप से विदित है कि मनुष्य जीवन का अंतिम लक्ष्य ही शांति प्राप्ति है अतः शांति शिक्षा को वर्तमान परिदृश्य में सबसे जरूरी आवश्यकता के रूप में देखा जा रहा है, जिसके लिये शांति शिक्षा एवं बौद्ध कालीन शैक्षिक मूल्यों को पाठ्यक्रम में समाहित करने की आवश्यकता है प्रस्तुत शोध पत्र में यह प्रयास किया गया है कि बौद्धकालीन शिक्षा में शांति शिक्षा को आधार प्रदान करने वाले तत्वों को पाठ्यक्रम में शामिल कर इसे मानव विकास में लगाया जा सके।

lanHkZ xzaFk

गांधी, इन्दिरा (1981), पीस स्टडी फार स्कूल्स, नेशनल हेराल्ड 20, 1981

फाडिया, बीएल (2009), अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध, आगरा : साहित्य प्रकाशन

पाण्डेय, वी0के0 (2009), प्राचीन भारत का राजनीतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास, इलाहाबाद : शारदा पुस्तक भवन

द्विवेदी राहुल, जे0डी0 सिंह (2007), जैन एवं बौद्ध एक समग्र अध्ययन, इलाहाबाद : यूथ कम्पटीशन टाइम्स

यूनेस्को (1972) लर्निंग टू द वर्ल्ड ऑफ एजुकेशन टू डे, एण्ड टूमारो, पेरिस, पृ0 197

गौतम, मुकेश कुमार (2018), विश्वशांति एवं सद्भाव हेतु शिक्षा, इनोवेशन द रिसर्च कान्सेप्ट, कानपुर, संस्करण 3, अंक–1, फरवरी पृष्ठ 198–152

धंग्रा, राखी गिरराज (2018) शांति शिक्षा का पाठ्यक्रम में एकीकरण, इण्टरनेशनल जनरल ऑफ एडवान्स एजुकेशन रिसर्च, दिल्ली, संस्करण–3, अंक–2, मार्च, पृ0 82–87